सेहेरग से हक नजीक, कह्या खासलखास मकान।
इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।५०।।

इन्हीं मोमिनों की शहेरग (सांस वाली नाड़ी) से भी नजदीक पारब्रह्म है। यही खासल खास परमधाम के रहने वाले हैं। यही सबका हिसाब करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे, इसलिए इन मोमिनों के दिल को ही हक ने अर्श बनाया है।

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान।
सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।५१।।

रसूल मुहम्मद कहते हैं कि खुदा परवरदिगार अपने मुखारबिन्द से इन मोमिनों की जमात की सिफत (प्रशंसा) करते हैं। इस बात को वही जानते हैं जिनके पास हक का इलम है और इन्हीं के दिल को अर्श कर खुदा बैठे हैं।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ७३३ ।।

सनंध–रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी

केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान।
माएने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान।।१।।

श्री महामतिजी कहती है कि मैं मोमिनों को कहती हूं पर सारा संसार सुनेगा। इस कुरान के जाहिरी या छिपे रहस्य को आज दिन तक कोई नहीं ले सका।

जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए।
सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए।।२।।

रसूल साहब ने कलमे के जाहिरी अर्थ भी बताए। पर उसे भी कोई नहीं ले सका तो मैं उसके गूढ़ रहस्य कैसे बता दूं।

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनो के कारन।
अंतर मैं ना कर सकों, अर्स रूहें मेरे तन।।३।।

मोमिनों के वास्ते फिर भी थोड़ी-सी पहचान कराती हूं। मैं मोमिन से अन्तर नहीं कर सकती, क्योंकि मोमिन मेरे परमधाम के तन हैं।

जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम।
आगूं अर्स रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम।।४।।

पहले कुरान के अर्थ जाहिर कर दिए हैं। अब बातूनी (बातिन) अर्थ भी जाहिर कर देती हूं। आगे अर्श की रूहों का मेला होगा जिसमें अखण्ड घर की और खसम की पहचान करा दूंगी।

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया एह।
ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे।।५।।

यह न समझना कि किसी कारण के बिना यह खेल बनाया है। यही कुरान का गूढ़ रहस्य है। दिल देकर समझ लेना।

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत।
हक भेजे अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत।।६।।

अक्षर पार अक्षरातीत अपने परमधाम से रसूल भेजेंगे। इस हकीकत को समझो उसके हाथ रूहों के लिए अपना फरमान भेजेंगे। यह दुनियां तो फानी है।

Nijanand App

दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान।
तो रसूल आया किन वास्ते, हक पे ले फुरमान।।७।।

यह सारी दुनियां तो फानी है और दूसरा कोई है नहीं, तो रसूल किसके लिए धनी से फरमान लेकर आए?

ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह।
देखो आंखें दिल खोलके, कोई मतलब बड़ा है ऐह।।८।।

यह नूरी फरिश्ते, संसार के जीवों के लिए नहीं आएंगे। दिल की आंखों को खोलकर इस हकीकत को देखो। इसमें बड़ा राज (रहस्य) छिपा है।

दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब।
ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब।।९।।

मुसलमान जाहिरी कहते हैं कि रसूल साहब हमारे वास्ते कुरान लेकर आए हैं। यह रसूल साहब को ऐसा इसलिए कहते हैं कि कहने वाले फानी दुनियां के बन्दे हैं।

क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होंए कागद।
ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सब्द।।१०।।

यदि उन्होंने कुरान को समझा होता तो वह अपने मुंह से ऐसा न बोलते। उन्हें तो न रसूल की पहचान है न कुरान की, इसलिए ऐसे शब्द बोलते हैं।

आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर।
तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवे क्यों कर।।११।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड घर की खबर नहीं है, तो उनके वास्ते कासिद (डाकिया) बनकर घर (परमधाम) से रसूल साहब क्यों आएंगे?

बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल।
तो कहे महंमद को कासिद, जो लानत ऊपर अकल।।१२।।

दुनियां बड़ी नासमझ है क्योंकि आदम (नारायण) की औलाद है। इनके दिलों पर शैतान (नारद) बैठा है, इसलिए मुहम्मद को कासिद (डाकिया) कहते हैं। इनकी अक्ल को धिक्कार है।

सो घर कह्या दुनी का, जो फुरमाने कह्या मुरदार।
तो आदम काढ़्या भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार।।१३।।

जिसको कुरान में नाचीज कहा है (फानी कहा है) वही दुनियां का घर है। इसी वास्ते आदम को बहिश्त से निकालकर दुनियां में भेज दिया है। यही (नारायण) दुनियां वालों का दादा है।

मोर सांप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेंती सैतान।
हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान।।१४।।

मोर और सांप चौकीदारों को धोखा देकर शैतान ने बाबा आदम को बहिश्त से बाहर निकलवा दिया। अब यही बाबा आदम अपनी चाहनाओं में गर्क हैं। संसार वाले लोग बाबा आदम को ही यकीन वाला मुसलमान कहते हैं।

Nijanand App

इन आदम की औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले।
तिन सब दिलों पातसाह, हुआ अजाजील ए।। १५ ।।

इस बाबा आदम की औलाद (नारायण के जगत के इन्सान) को अजाजील फरिश्ता (भगवान विष्णु) आगे बढ़ने नहीं देता, क्योंकि उसे लानत लगी है, इसलिए दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस की बादशाही (अधिकार) है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जो कहे भाई महंमद के।
महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते।। १६ ।।

मोमिन जो मुहम्मद के भाई कहलाते हैं वह परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं। इनके वास्ते ही यह खेल बना है और इन भाइयों के वास्ते ही मुहम्मद रसूल बनकर आए हैं।

महंमद कहे मैं उनों से, ओ मुझ से जानो तुम।
मुरदार करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम।। १७ ।।

मुहम्मद कहते हैं कि मैं मोमिनों में से ही हूं और वह मेरे में से हैं, यह तुम जान लो। उन्हीं मोमिनों ने दुनियां को नाचीज समझकर छोड़ दिया है और पारब्रह्म के चरणों में बन्दगी करते हैं।

महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पे फुरमान।
सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान।। १८ ।।

इन्हीं मोमिनों के लिए हक से मुहम्मद कुरान लेकर आए हैं। इनके द्वारा सारी दुनियां को एक खुदा का पूजक बनाकर बहिश्तों में अखण्ड करना है।

ए जो खेल कबूतर, कहे अर्स से आया रसूल।
सो कहे हमारा रसूल, दोजख में जले इन भूल।। १९ ।।

यह माया के जीव खेल के कबूतर की तरह हैं। जो अर्श से आए रसूल को अपना कहते हैं और इसी कारण वह दोजख की आग में जलेंगे।

पढ़े कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल।
जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोड़े न दुनी एक पल।। २० ।।

यह दुनियां के जीव अल्लाह के कलाम को (कुरान को) अपनी अक्ल से पढ़ रहे हैं। जिस चीज को कुरान ने नाचीज समझकर छोड़ने को कहा उसे यह लोग एक पल के लिए भी नहीं छोड़ते।

किस्सा लिख्या अजाजील का, किया सिजदा सब जिमी पर।
तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर।। २१ ।।

एक प्रश्न है? जिस अजाजील ने सारी जमीन पर खुदा के नाम का सिजदा किया, उसने सिजदे के बदले में सारी दुनियां की राह को क्यों बन्द किया? उसे यह दण्ड क्यों मिला?

कोई केहेसी ए फल गया गुमाने, पर सो दोजख जले गुमान।
फल एता बड़ा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान।। २२ ।।

कोई शायद यह कहे कि अहंकार के गुनाह के कारण यह दण्ड मिला है तो गुमान के लिए तो उसे दोजख में जलना चाहिए। बन्दगी का इतना बड़ा फल मेहरबान खुदा किसी का गंवा नहीं सकते।

Nijanand App

दो अंगुल जिमी छोड़ी नहीं, इन सकसे सिजदे बिगर।
एती एके बंदगी क्यों होवहीं, तुम क्यों न देखो दिल धर।। २३ ।।

फरिश्ते ने सिजदे के बिना दो अंगुल भी जमीन नहीं छोड़ी। इतनी बड़ी दुनियां पर एक आदमी सिजदा कैसे बजा सकता है? तुम इस बात को दिल में विचार करके क्यों नहीं देखते?

ए बंदगी न होए कई करोरों, ऐसी हक पर करी बेसुमार।
तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार।। २४ ।।

ऐसे सिजदे तो करोड़ों लोग भी मिलकर नहीं कर सकते जैसे इसने हक पर बेशुमार किए हैं। इस सिजदे के बदले में यह फल पाया कि अजाजील सबका रास्ता रोक बैठे हैं।

ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों दे फल नुकसान।
ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों नहीं पेहेचान।। २५ ।।

ऐसी बेशुमार बन्दगी करने वाले को खुदा नुकसान वाला फल क्यों देंगे? यह माएने तो जाहिर इसलिए कहे हैं कि दुनियां अजाजील को नहीं पहचानती।

ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचानें हादी हक।
ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक।। २६ ।।

दुनियां न अपने आपको पहचानती है, न हादी (श्यामाजी) को और न हक को। न यह जानती है कि उनके दिलों पर अजाजील बैठा है जो उन्हें दोजख में डालेगा।

अजाजील जीव दुनी का, ए जो कह्या माहें सब।
किया भूल पत्थर पर सिजदा, कहे हम किया ऊपर रब।। २७ ।।

अजाजील दुनियां का जीव है जो सबके अन्दर बैठा है। दुनियां पत्थर पर सिजदा करती है और भूल से कहती है कि हमने खुदा पर सिजदा किया है।

बाहेर देखावें अबलीस, वह कह्या बैठा दिल पर।
कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर।। २८ ।।

दुनियां समझती है कि शैतान बाहर से आएगा। वह तो दिल पर बैठा है। दुनियां अपने को पाक समझती है और कहती है कि शैतान को दोजख में जलना होगा।

अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत।
इमाम रूहों पे लुदंनी, जित अर्स हक मारफत।। २९ ।।

अब कुरान के हकीकत के भेद खुले हैं। इमाम और रूहों के पास हकीकी ज्ञान है जिससे उनको घर की तथा हक की पहचान हुई है।

दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जो पढ़े चौदे किताब।
सब जिमिऐं करे सिजदा, दिल पावें न अर्स खिताब।। ३० ।।

मोमिनों के दिल के बिना और किसी का दिल खुदा का अर्श नहीं हो सकता। चाहे चौदह तबकों के लोग कुरान पढ़ें और सारी जमीन पर सिजदा करें, तो भी अर्श दिल का खिताब नहीं पा सकते।

हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछू चीन्हे मोमिन।
भूले मोमिन का सिजदा, तो हुई दस बिध दोजख तिन।। ३१ ।।

जाहिरी मुसलमान हादी की, हक की और मोमिनों की पहचान नहीं कर सके। वह मोमिनों का सिजदा भी भूल गए, तो उनको दस तरह की दोजख की अग्नि में जलना पड़ा।

Nijanand App

नोट : दस तरह की दोजख का वर्णन कयामतनामा प्रकरण २२, चौपाई २४ से ३० तक में है।

फैल हाल न देखें अपने, कहें अजाजीलें फेरया फुरमान।
अपनी दोजख देवें औरों को, पर हक पे सब पेहेचान।। ३२ ।।

यह जाहिरी मुसलमान अपनी करनी और रहनी को भी नहीं देखते। अपने गुनाहों का फल और के मत्थे लगाते हैं और कहते हैं कि अजाजील ने फरमान फेरा था। इस प्रकार धोखा करते हैं, पर खुदा सबकी हकीकत जानता है।

ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहें।
पर हक की आग जो दोजख, फैल माफक चुन ले ताए।। ३३ ।।

जिस तरह से दुनियां को धोखा देते हैं उसी तरह से खुदा को भी धोखा देना चाहते हैं, पर हक के पास इस तरह के गुनाहों की सजा है। उनकी करनी के माफिक उनको सजा मिलेगी।

कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन।
दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन।। ३४ ।।

जाहिरी मुसलमान कहते हैं कि हक की सूरत नहीं है, तो फिर फरमान किसने भेजा था? यह फरमान किनके लिए भेजा और कुरान को कौन जाहिर करेगा?

एती सुध न हमको, खोलसी कौन हकीकत।
कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत।। ३५ ।।

इतनी भी सुध हमको नहीं है तो हकीकत के भेद कौन खोलेगा? फिर कयामत को जाहिर कौन करेगा और हक के मारफत ज्ञान की पहचान कौन कराएगा?

माएने न पावें सब्द के, बड़े सब्द रसूल।
पर दम न समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल।। ३६ ।।

रसूल साहब के एक शब्द के माएने नहीं जानते। कुरान में तो बड़ी बातें कहीं हैं, पर इस फानी दुनियां के जाहिरी मुसलमान उनके अर्थ नहीं जानते हैं, क्योंकि उनका मूल निराकार है और सपने की दुनियां है।

ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अर्स की होए।
एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए।। ३७ ।।

इस कुरान के शब्दों के माएने वही समझेंगे जो रूहें परमधाम की होंगी। एक रसूल साहब ही अक्षर के पार परमधाम से आए हैं। बाकी दुनियां तो सब सपने की है।

क्यों कर आवे झूठ पर, जो अर्स बका का होए।
ए गुझ माएने मोमिन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए।। ३८ ।।

सपने की दुनियां वालों पर अखण्ड परमधाम से रसूल क्यों आएंगे? इसकी हकीकत को भी अर्श के मोमिन के बिना यह फानी दुनियां के लोग नहीं समझ सकते।

दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नाहीं झूठ सब्द।
तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद।। ३९ ।।

यह सारी दुनियां सपने की है। इसमें कोई शक की बात नहीं है। चौदह तबक (लोक) निराकार के अन्दर हैं, फानी हैं, परन्तु हक का घर बेहद के परे अखण्ड परमधाम में है।

Nijanand App

चौदे तबक कहे फरेब के, काहूं न किसी की गम।
ना गम रसूल फुरमान, कहां हक कौन हम।।४०।।

चौदह तबकों की दुनियां फानी है। यहां कोई भी किसी को पहचानता नहीं। रसूल साहब के कुरान की पहचान नहीं है। यह नहीं जानते हैं कि कहां खुदा और कहां हम फानी लोग?

पैगंमर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल।
संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल।।४१।।

रसूल साहब ने पुकार कर कहा कि मैं अल्लाह का पैगम्बर हूं। मेरे साथ वही चलेगा जो अपने निज घर परमधाम की वाणी को पहचानता है।

मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम।
इनों को मेरी खातिर, देसी भिस्त खसम।।४२।।

रसूल साहब कहते हैं कि मेरा घर अक्षर के पार है। सारी दुनियां निराकार (फानी) से है। मेरे वास्ते ही फानी दुनियां के लोगों को खुदा बहिश्त में कायम करेगा।

ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात।
ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई न नबी की बात।।४३।।

यह छल के मोहोरे (मोहरे) ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी झूठ के हैं, तो इनके लिए नूरी रसूल क्यों आएगा? दिल के अन्धे अज्ञानी ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि इन्होंने रसूल साहब के कुरान को समझा नहीं है।

नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए।
पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए।।४४।।

नूरी फरिश्ता तो वहीं भेजा जाता है, जहां पर नूरी लोग रहते हों, पर इस संसार के झूठे जीवों के लिए परमधाम से कोई नहीं आता।

ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अन्तर।
पर जिन आंख कान न अकल, सोए समझे क्यों कर।।४५।।

रसूल साहब और खुदा में कोई अन्तर नहीं है, इसलिए यह संसार के जीवों के लिए नहीं आएंगे पर जिनकी आंख, कान और अक्ल नहीं है, वह इस बात को कैसे समझेंगे?

ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब।
पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब।।४६।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि यह सपने के लोग रसूल साहब को इतना छोटा समझ बैठे हैं। ऐसा सुनकर मुझे गुस्सा आता है, पर मैं दोष किसको दूं? आगे तो दुनियां सपने की है।

और जो टेढ़ा कहे रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल।
पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल।।४७।।

जो कोई रसूल साहब को उलटे शब्द कहता है, मैं उनकी अकड़ को सीधी कर दूंगा, पर गुस्सा करूं तो किस पर? आगे तो दुनियां मृग जल के समान है। कुछ है ही नहीं।

Nijanand App

ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अर्स मोमिन।
सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन।।४८।।

अपना नूरी फरिश्ता तो वहीं भेजना चाहिए जहां अपनी नूरी रूहें (मोमिन) हों। वह रूह मोमिन हम ही हैं और हम ही अपने प्यारे माशूक हक श्री राजजी महाराज के तन हैं, अर्थात् रसूल साहब हमारे वास्ते आए हैं।

सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार।
रूहें अर्स से उतरी, रस इस्क लिए सिरदार।।४९।।

रसूल साहब ने पुकार कर यहां यह भी कहा कि रूहें परमधाम से उतरी हैं और इनके मालिक जामे इश्क लेकर आए हैं।

ए माएने सो समझहीं, जो नूरजमाल से होए।
ए वतनी रूहें मोमिन, और ख्वाबी दम सब कोए।।५०।।

इन बातों के माएने वही समझेंगे जो नूरजमाल (श्री राजजी महाराज) के अंग होंगे। इनके अंग ही घर की रूहें (मोमिन) हैं और बाकी सब दुनियां सपने की है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जाको एतो बड़ो मरातब।
करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर न होए किन कब।।५१।।

मोमिन नूर बिलन्द (परमधाम) से उतरे हैं, इसीलिए इनका बहुत बड़ा दर्जा है। यह सारी दुनियां को निर्मल बनाएंगे। इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।

दुनी दिल कह्या सैतान, दिल मोमिन अर्स हक।
सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक।।५२।।

दुनियां के दिलों में शैतान (नारद) की बैठक है और मोमिनों के दिल में हक की बैठक है, इसलिए दुनियां वाले जिनके चारों तरफ गुनाहों की दोजख है, वह मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकते।

बड़ी बड़ाई मोमिनों, जाके बड़े अंकूर।
तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर।।५३।।

मोमिनों की महिमा बहुत बड़ी है। इनकी निसबत (मूल सम्बन्ध) परमधाम (हक) से है, इसलिए उस खुदा ने (श्री राजजी महाराज) ने इनके वास्ते ही अपने अंग रसूल साहब को भेजा।

सो आए अब रूह मोमिन, जाको अर्स वतन।
ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन।।५४।।

अब वह रूहें, जिनका घर परमधाम में है, खेल में आ गई हैं। यह कुरान इन्हीं के वास्ते ही आया है, इसलिए इस कुरान के अर्थ इनके बगैर कोई नहीं खोल सकेगा।

खेल किया जिन खातिर, सो आइयां देखन अब।
ए खेल अर्स रूहें देखहीं, और खेल है सब।।५५।।

यह खेल जिनके लिए बनाया है वह रूहें देखने के वास्ते आ गई हैं। यह अर्श के मोमिन ही खेल देख रहे हैं। बाकी सब तो खेल है।

Nijanand App

कोई केहेसी खेल कदीम का, सो अब आइयां क्यों कर।
ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊं खबर।।५६।।

कोई यदि यह कहे कि यह खेल दुनियां तो हमेशा से है, परन्तु रूहें अब क्यों आईं? इस रहस्य के भेद भी तुम्हें सब बताती हूं।

खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए।
ए वतन के पाव पल में, कई पैदा फना हो जाए।।५७।।

इस खेल को बने हुए एक क्षण भी नहीं हुआ है। वह भी तुम्हें समझा देती हूं। उस परमधाम के चौथाई पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम।
सो रूहें तब न हुती, पेहेले तो न हुआ हुकम।।५८।।

रूहों को खेल दिखाने के लिए ही यह चौदह तबकों (लोकों) की दुनियां बनी है। जब रूहें यहां नहीं थीं तो उस समय इस ब्रह्माण्ड को भी बनाने का हुकम नहीं हुआ था।

कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान।
सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पें पेहेचान।।५९।।

कोई यह भी कहेगा कि रसूल साहब ने खुदा के हुकम के बिना कुरान के अर्थ नहीं खोले। रसूल साहब खुद हुकम के स्वरूप हैं। इसे हम रूहें जानती हैं।

जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान।
आसिक ए मासूक कह्या, सो बिन देखे मिले क्यों तान।।६०।।

ऐसा कोई मत कहना कि रसूल और खुदा के बीच में कोई परदा है। श्री राजजी महाराजजी ने रसूल साहब को माशूक कहा है, यदि यह दोनों एक स्वरूप नहीं हैं तो एक जैसी बात कैसे बोलते हैं?

इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब।
तो इत आखिर इमाम, काहे को आवत अब।।६१।।

यदि इस कुरान के माएने रसूल साहब उस समय खोल देते तो इमाम मेंहदी साहब अब किस लिए आते?

जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर।
जो अर्स अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखिर।।६२।।

यदि रसूल साहब उसी समय माएने खोल देते, तो यह खेल कैसे खड़ा रहता। यदि अर्श अजीम (परमधाम) को जाहिर कर देते तो उसी समय आखिरत हो जाती।

ताथें गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों होए।।६३।।

यदि उस समय कोई सुनने वाला होता तो रसूल साहब कुरान के माएने खोल देते। उस समय अखण्ड परमधाम की रूहें यहां नहीं थीं तो कुरान की गुझ (गुह्य) बातें कैसे जाहिर होतीं।

एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे न कोई संग।
एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग।।६४।।

एक बात यह भी रसूल साहब ने कही कि मेरे साथ अर्श की रूहें नहीं हैं। केवल एक हुकम का स्वरूप अली ही (जोश धनी का) मेरे साथ है। परमधाम का कोई अंग (मोमिन) मेरे साथ नहीं है।

Nijanand App

तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखिर।
महंमद मेंहेदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातिर।।६५।।

तो रसूल साहब समय की मोहलत देकर वापस परमधाम चले गए और वायदा कर गए कि मैं आखिरत में मुहम्मद मेंहदी और रूह अल्लाह के साथ मोमिनों के वास्ते आऊंगा।

तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान।
चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान।।६६।।

इसलिए रसूल साहब से उस समय कुरान के अर्थ नहीं खोले गए, इसलिए चौदह तबकों की दुनियां हैरान हुई कि रसूल साहब ने कुरान के भेद क्यों नहीं खोले।

नूर पार अर्स मोमिन, हुते ना तिन बखत।
तो महंमद मेंहेदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत।।६७।।

उस समय जब रसूल साहब आए थे, तो सारी रूहें जो अक्षर पार परमधाम में रहने वाली हैं, खेल में नहीं उतरी थीं, इसलिए आखिरत में जब मोमिन आए तो उनके लिए मुहम्मद (श्यामाजी) मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आए।

बात बड़ी मोमिन की, जिनके अर्स में तन।
ए रूहें दरगाह की, जिनको अर्स वतन।।६८।।

मोमिन जिनके तन परमधाम में हैं, उनकी बहुत बड़ी बात है। यह रूह उस पाक दरगाह (पूज्य स्थान) की है और इनका घर परमधाम है।

अर्स खावंद एक मासूक, दूसरा नाहीं कोए।
और खेल सब नूरियों किया, यामें भी विध दोए।।६९।।

अर्श में एक श्री राजजी महाराज, श्यामा जी, रूहें हैं और दूसरा कोई नहीं है। इस संसार की रचना नूरी फरिश्तों ने की है, जिसमें दो तरह के जीव हैं।

यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान।
तीसरा दम देखन का, ना कछूए हैवान।।७०।।

इसमें एक तो नारायण की रूह असल है, दूसरे सारा जगत विष्णु के पूजक, काफिर हैं और तीसरे जिनसे खेल चल रहा है, सब जगत के जीव पशु के समान हैं।

हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछु बुध।
जो जाने ना वेद कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध।।७१।।

उनको हैवान इसलिए कहा है कि वह बुद्धि हीन हैं। इन्हें वेद-कतेब का कुछ ज्ञान नहीं है, इसीलिए इनको बेसुध कहा है।

जो रूह अर्स अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान।
ए बेवरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान।।७२।।

जो रूहें परमधाम की हैं उनका काफिरों से मेल नहीं हो सकता। इसकी हकीकत इमाम मेंहदी के बिना कौन बताएगा?

Nijanand App

सांचे सुख मोमिन के, अजाजील और सुख।
पर जो सुख मोमिन के, सो कहे न जाए या मुख।।७३ ।।

मोमिनों के सुख अखण्ड हैं। अजाजील का सुख बैकुण्ठ का है। जो मोमिनों के सुख हैं उनका बयान इस मुख से नहीं हो सकता।

अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल।
बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल।।७४ ।।

अजाजील (भगवान विष्णु) तथा काफिरों (भगवान विष्णु के पूजक) को भी अखण्ड सुख मिलेंगे। मोमिनों की कृपा से ही इनके दिल के संशय मिटेंगे।

करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन।
पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमिन।।७५ ।।

इन सबके दिलों को साफ करके सभी को अखण्ड बहिश्त में कायम करेंगे, परन्तु रूहों के सुख तो अखण्ड हैं, जहां श्री राजजी, श्यामाजी और मोमिन मिलकर सुख लेते हैं।

नूर सरूपें रसूल, हक आगे खड़ा हुकम।
मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम।।७६ ।।

रसूल साहब नूर का स्वरूप धारण कर परमधाम में हक के सामने खड़े हैं। वहां श्यामाजी और सखियों, का मूल मेला है जहां सब सखियां श्री राजजी के चरणों के तले बैठी हैं।

नूर के एक पल में, इत इंड चले कई जाए।
ए भी मोमिनों खेल देखाए के, देसी सबे उड़ाए।।७७ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में यहां कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। इस ब्रह्माण्ड को भी मोमिनों को खेल दिखाकर उड़ा देंगे।

रूहें फरिस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक।
दुनी सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक।।७८ ।।

रूहों और फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) के वास्ते चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड बनाया है। इसमें जगत के जीव संशय में ही खेल रहे हैं और उनको अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की खबर तक नहीं है।

सो सक भानी सब दुनी की, महंमद मेंहेदी ईसा आए।
अर्स कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उड़ाए।।७९ ।।

मुहम्मद मेंहदी और ईसा ने आकर सबके संशय मिटा दिए जिससे अखण्ड घर के ज्ञान (तारतम वाणी) के सूर्य का उजाला हुआ। इसने काफिरों के कुफ्र को मिटा दिया।

काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए।
मोमिनों मुस्लिम खातिर, भिस्त जो देसी ताए।।८० ।।

काफिरों के जीव भी पश्चाताप की अग्नि से पाक साफ हो जाएंगे और मोमिनों के आने के कारण इनको भी अखण्ड बहिश्तों में कायमी दी जाएगी।

Nijanand App

बड़े नसीब रूहें अर्स की, जिन जावे खेल में भूल।
मोमिन वास्ते अर्स से, आए इमाम ईसा रसूल।। ८१ ।।

रूहों के बड़े नसीब हैं यह खेल में भूल न जाएं, इसलिए इन मोमिनों के वास्ते ही परमधाम से इमाम मेंहदी, ईसा और रसूल साहब आए हैं। [(इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ईसा (श्री श्यामा महारानी) रसूल साहब (मुहम्मद)।]

ए सब हुआ मोमिनों खातिर, पेहेले भेज्या कागद।
ए तमासा देखाए के, उड़ाए देसी ज्यों गरद।। ८२ ।।

यह सब खेल मोमिनों के लिए ही हुआ है। पहले कुरान को भेजा फिर खेल का तमाशा दिखलाकर इसे मिट्टी के समान मिटा दिया जाएगा।

जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड।
बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड।। ८३ ।।

यह पहला ब्रह्माण्ड ऐसा है जिसे रूहों ने देखा है। इन रूहों (मोमिनों) की कृपा से ही सब दुनियां अखण्ड होगी।

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मोमिन अर्स अंकूर।
आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर।। ८४ ।।

मोमिनों की निसबत (मूल सम्बन्ध) की महिमा मैं इस जबान से कैसे कहूं? यह अर्श के अंकुर हैं। अब सब के स्वामी इमाम मेंहदी आ गए हैं। यह सबके संशय मिटा देंगे।

ए जो नसीब मोमिन का, सो लिख्या मिने फुरमान।
पर जहान में गुझ जाहेर हुई, अब मोमिनों की पेहेचान।। ८५ ।।

मोमिनों के ऐसे बड़े मरातबे (पद, गरिमा, महिमा) का वर्णन कुरान में है, परन्तु मोमिन कौन हैं, इसकी पहचान संसार में अब हुई है।

गिरो मोमिन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम।
बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी मांहें अल्ला कलाम।। ८६ ।।

मोमिनों की जमात के बहुत सारे नाम और महिमा कुरान में अनेक तरह से लिखी हैं।

तारीफ ईसा मेंहेदी की, सो इन जुबां कही न जाए।
पेहेचान रसूल खुदाए की, अर्स वतन दिया बताए।। ८७ ।।

ईसा (श्यामाजी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की महिमा इस जबान से नहीं की जाती। इन्होंने रसूल के घर की तथा खुदा की सारी पहचान करा दी है।

तारीफ काजी कजाए की, क्यों कहूं या मुख।
नाबूद को कायम किए, दिए रूहों कायम सुख।। ८८ ।।

इमाम मेंहदी जो कजा के दिन इन्साफ करेंगे उनकी तारीफ को इस मुख से कैसे वर्णन करूं? उस दिन फानी दुनियां को अखण्ड करेंगे तथा रूहों को परमधाम का अखण्ड सुख देंगे।

माएनें इन कुरान के, गुझ रही थी बात।
सो अर्स रूहें जाहेर हुई, सब जन में फैलात।। ८९ ।।

कुरान के यह रहस्य आज दिन तक छिपे थे। अब परमधाम के मोमिन जाहिर हो गए हैं, इसलिए इसका ज्ञान अब सब संसार में फैल जाएगा।

Nijanand App

नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए।
पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए।। १० ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारी बराबरी कोई कर नहीं सकता और न उसके लिए कुछ कह सकता है, पर मुझे चैन तभी पड़ेगा जब सब दुनियां को तुम्हारा मरातबा (दर्जा) क्या है, आंखों से दिखा दूं।

ए किया तुम खातिर, समझ लीजो दिल मांहें।
रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नांहें।। ११ ।।

हे मोमिनो! यह खेल तुम्हारे वास्ते किया। यह दिल में अच्छी तरह समझ लो। तुम तो श्री राजजी के चरणों तले मूल मिलावे में बैठे हो जहां दूसरा और कोई नहीं है।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ८२४ ।।

सनन्ध–नबी नारायण की

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम।
पर कहे कोई न समझया, अब कर देखाऊं तुम।। १ ।।

रसूल साहब ने जो कजा के दिन (इन्साफ के दिन) की बात कही थी उसे हमने थोड़ा सा बताया है, पर कहने से कोई समझ नहीं सका, इसलिए अब करके दिखाती हूं।

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल।
भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल।। २ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में दीन को तथा इस छल रूपी संसार को कहा है। अब तुमको मैं जाहिर कर देती हूं जिससे सब संशय मिट जाएं।

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन।
निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन।। ३ ।।

जब मैं अखण्ड परमधाम की वाणी को जाहिर कर दूंगी तब माया की कुछ भी शक्ति नहीं चलेगी। मैं इसको जड़ से उखाड़ कर फेंक दूंगी। परमधाम की तारतम वाणी को जाहिर करूंगी।

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक।
खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बान पुस्तक।। ४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के चर और अचर के छल की बात तुमने सुनी है। इस खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सभी ग्रन्थों में महिमा गाई गई है।

बैकुंठ से पाताल लों, बनि आदम हैवान।
इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रुद्र नारायन।। ५ ।।

बैकुण्ठ से पाताल तक जितने भी आदमी या जीव हैं इन सबकी हकीकत बताई है जिनमें ब्रह्माजी, शंकरजी और नारायण भगवान भी शामिल हैं।

अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुए नांहें।
पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें।। ६ ।।

हे मोमिनो! अब तुम सुनो, यह खेल कुछ भी नहीं है, पर देखने में कुछ तो दिख रहा है। इस संशय को भी तुम्हारे दिल से निकाल देती हूं।

Nijanand App